

Vol-09, Issue-7, January-June 2019

ISSN No : 2278-0408

World Translation

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal



Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Dr Surendra pandey
(Editor)

Dr vikash kumar
(Editor)

अनुक्रम

1.	किसान आंदोलन (1947-2000) : दशा और दिशा रानी कुमारी	10-13
2.	पंचमहायज्ञों का वर्तमान में उपयोगिता डॉ० दिव्या शुक्ला	14-16
3.	मूल्यों का संकट और समकालीन हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श कुमारी ऋचा	17-20
4.	कोयला खदान के मजदूरों का जिन्दगीनामा डॉ० रवीन्द्र कुमार यादव	21-23
5.	नवगीत के उन्नायक : डॉ० शम्भूनाथ सिंह नीतू जायसवाल	24-26
6.	केदारनाथ मिश्र प्रभात और भारतीय राष्ट्रवाद प्रीति पाण्डेय	27-36
7.	समकालीन कहानियों में स्त्री विमर्श डॉ. अफरोज बेगम	37-41

समकालीन कहानियों में स्त्री विमर्श

डॉ. अफरोज बेगम*

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कथा साहित्य में नया मोड़ आने के कारण कहानी में कई नये स्वर सुनायी पड़ते हैं। संक्रमणकाल के दौर से गुजरते हुए हिन्दी कथा साहित्य में कई नये आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ। हिन्दी का कथा साहित्य उद्भव से लगभग स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व तक मनोरंजन का साहित्य माना गया और स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् नयी कहानी विविधमुखी होकर अकहानी, सचेतन कहानी, समकालीन कहानी, सहज कहानी, समान्तर कहानी, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी सामने आयी।

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में असगर वजाहत, ममता कालिया, तथा मैत्रेयी पुष्पा का कथन साहित्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन कथाकारों के कुछ महत्वपूर्ण और चुनिन्दा कहानी लेखन में स्त्री जीवन के विविध आयामों को देखे जा सकते हैं। इन कथाकारों की मुख्य रूप से चार कहानियाँ जो मूलतः स्त्री जीवन की मार्मिक गाथा तथा क्रिया रूप का चित्रण करती हैं, जो यथार्थ जीवन और हमारे रोजमर्रा के जीवन में व्यक्त हो रहा है। ये कहानियाँ हैं— 'ड्रेन में रहने वाली लड़कियाँ', 'लड़कियाँ', बोलने वाली औरत तथा 'गोमा हँसती है'।

आज के बदलते परिवेश में जहाँ हर मुद्दों पर चिन्तक का फलक विस्तार पा रहा है वहीं अस्तित्व और विमर्श पर गहन-चिन्तन-मनन हो रहा है। आज शैक्षिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं और इसी पायदान पर स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता, विमर्श, सशक्तिकरण प्रश्नों से हम लगातार टकरा रहे हैं। स्त्री और उसके उठते प्रश्न स्त्री के लिए न्याय तथा सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक बराबरी का संघर्ष स्त्री मुक्ति का संघर्ष है।

विगत कई वर्षों से स्त्री विचार के केन्द्र में रही है, चाहे हमारे जीवन में हो या साहित्य में। स्त्री के कई रूप हैं बेटी, माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहन, तवायफ़। स्त्री कभी अपने अस्तित्व को तरासती नजर आती है तो कभी दमघोटूँ या दकियानूसी माहौल में दम तोड़ती नजर आती है। इसके अलावा स्त्री के अन्य रूप भी हैं जैसे— बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सामानों की ब्रिकी के लिए मुस्कान बिखेरती विश्व सुन्दरी, बाजार में बैठी हुई सेल्सगर्ल।

स्त्री विमर्श की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि सदियों से स्त्री सतायी गई है। इन सतायी गयी स्त्रियों को समाज में सम्मान व अधिकार मिल सके। घर के अन्दर तथा घर के बाहर दोनों जगहों पर स्त्री प्रताड़ित होती रही है। आज की स्त्री परम्परागत ढाँचे को ही नहीं यूटोपिया की रचना भी कर रही है। वह अपने लिए एक नये प्रतिमान भी गढ़ रही है।

एक स्थान पर रमणिका गुप्ता स्त्री की मनःस्थिति का अवलोकन करती हुई मालूम पड़ती है— "मैं आजाद होना चाहती हूँ। इसका अर्थ यह तो नहीं/ मैं तुमसे मुक्त होना चाहती है/ न ही आजाद होने का अर्थ है तुम्हारे प्यार से मुक्त होना/ मैं तो बस/प्यार करने की हकदार होना चाहती हूँ/खुद प्यार करना चाहती हूँ/मैंने कब नकारे हैं रिश्ते/कब तोड़े हैं नेह के धागे? मैंने तो तोड़ी है सदियों से सीखी चुप्पी।"

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सगर (म.प्र.)